आशीष: प.पू.आ. श्री रविदेव सूरीश्वरजी म.सा

अर्हम् साईट प्रकाशित

अर्हम् दैनिक

Arham Site

अर्हम् साईट

ता. 1. 4. 2025

मंगलवार

चैत्र सुदी त्रीज

अंक : 1

आनंदराज की कलम

स्वार्थ से जीवन अंधकारमय

1. स्वार्थ ही है मनुष्य का स्वाभाविक गुण,
2. यह कभी अच्छा तो कभी बुरा रूप धरता है।
3. जब स्वार्थ में करुणा और दया शामिल हो,
4. तब यह समाज के लिए लाभकारी बन जाता है।
5. पर जब स्वार्थ अंधकार में छुप जाए,
6. तब यह केवल नफरत और संघर्ष को बढ़ाए।
7. स्वार्थी व्यक्ति अपने हित में ही रहता है,
8. दूसरों के दर्द और खुशी से अनभिज्ञ रहता है।
9. पर एक सच्चा इंसान जानता है कि
10. स्वार्थ से ज्यादा महान है परोपकार का पथ।

परोपकार ही सबसे महान

1. परोपकार ही है सच्चे दिल की पहचान,
2. यह फैलाता है प्रेम और स्नेह की धूप।
3. बिना स्वार्थ के किया गया हर अच्छा कार्य,
4. बनाता है जीवन को और भी सुंदर और सार्थक।
5. सहायता का हाथ बढ़ाना ही है परोपकार,
6. जब हम किसी के दुख को हल्का करें यार।
7. परोपकारी हृदय में होती है दया और समर्पण,
8. नफ़रत और स्वार्थ से दूर, बस होती है एक जुड़ाव।
9. सच्चा परोपकार न केवल दूसरों को खुश करता है,
10. बल्कि स्वयं के आत्मा को भी शांति और सुख से भरता है।

~ मुनि आगमप्रिय विजय {आनंदराज}

धर्मलाभ

जैसे दीया बिना तेल के
जल नहीं सकता,
वैसे ही इंसान
बिना अच्छे विचारों के
आगे नहीं बढ़ सकता।

आचार्य श्री रविदेव सूरिजी

अर्हम् प्रश्नमंच

भगवान महावीर स्वामी
के जमाई का नाम ?

जवाब 8849680131
whatsapp करें...
झे द्वारा विजेता का नाम
अर्हम् दैनिक में आयेगा

contact : 8849680131
arhamsite9@gmail.com

आज के अंक लाभार्थी
श्री सारिका जैन
विजयवाडा

आशीष: प.पू.आ. श्री रविदेव सूरीश्वरजी म.सा

अर्हम् साईट प्रकाशित

अर्हम् दैनिक

Arham Site
अर्हम् साईट
ता. 2. 4. 2025
बुधवार
चैत्र सुदी पांचम

अंक : 2

आनंदराज की कलम

सफलता के अमूल्य सिद्धांत
जिन्हें अपनाकर कोई भी व्यक्ति अपने जीवन में उन्नति और समृद्धि हासिल कर सकता है:

1. **स्पष्ट लक्ष्य निर्धारित करें:** सफलता के लिए एक स्पष्ट और सटीक लक्ष्य होना जरूरी है।
2. **मजबूत इच्छाशक्ति:** किसी भी चुनौती का सामना करने के लिए दृढ़ निश्चय आवश्यक है।
3. **सकारात्मक सोच:** सकारात्मक दृष्टिकोण से हर समस्या का समाधान संभव है।
4. **कड़ी मेहनत:** निरंतर परिश्रम और मेहनत ही सफलता की कुंजी है।
5. **समय का प्रबंधन:** अपने समय का सदुपयोग करें और उसे महत्व दें।
6. **आत्म-विश्वास:** खुद पर विश्वास रखें, यह आपको हर मुश्किल को पार करने में मदद करेगा।
7. **असफलता से सीखें:** असफलता को एक अवसर के रूप में देखें और उससे सीखें।
8. **नवाचार और रचनात्मकता:** नए विचारों और तरीकों को अपनाने से सफलता के दरवाजे खुलते हैं।
9. **लक्ष्य पर केंद्रित रहें:** अपने लक्ष्य से भटकें नहीं, ध्यान केंद्रित रखें।
10. **सकारात्मक संबंध बनाएं:** अच्छे लोगों के साथ समय बिताने से प्रेरणा मिलती है।

इन सिद्धांतों को अपनाकर आप न केवल सफलता प्राप्त कर सकते हैं, बल्कि जीवन को अर्थपूर्ण और संतोषजनक भी बना सकते हैं।

~ मुनि आगमप्रिय विजय {आनंदराज}

धर्मलाभ

सफलता का मापदंड यह नहीं कि
आप क्या हासिल करते हैं,
बल्कि यह है कि
आप कितनी बार असफल होकर भी
उठ खड़े होते हैं।

आचार्य श्री रविदेव सूरिजी

मार्मिक प्रश्नमंच - 150

आत्मा के मूल गुणों कितने ??

(1) 12 (2) 8 (3) 9 (4) 124

कल का जवाब : जमाली
विजेता: मालव शाह - अमदावाद
जवाब 9428913847 पर whatsapp करें...
ड्रो द्वारा विजेता को नाम अर्हम् दैनिक में आयेगा एवं 13 ₹ ईनाम प्राप्त होगा।
contact : 8849680131
arhamsite9@gmail.com

आज के अंक लाभार्थी
प्रभु भक्त परिवार
नायगांव

आशीष: प.पू.आ. श्री रविदेव सूरीश्वरजी म.सा

अर्हम् साईट प्रकाशित

अर्हम् दैनिक

अंक : 3

Arham Site

अर्हम् साईट

ता. 3. 4. 2025

गुरुवार

चैत्र सुदी छट्ठ

आनंदराज की कलम

राग से वितराग बनना एक गहन आत्मिक प्रक्रिया है, जिसमें मनुष्य अपने मन के आसक्तियों और इच्छाओं से मुक्त होकर आत्म-साक्षात्कार की अवस्था तक पहुँचता है।

1. राग और वितराग की समझ

"राग"यह मन की उन इच्छाओं, आसक्तियों, और भावनाओं को दर्शाता है, जिनसे हम किसी वस्तु, व्यक्ति, या अनुभव से जुड़ जाते हैं। यह सुख-दुख के चक्र में फंसा देता है।

"वितराग" इसका अर्थ है "राग से परे" या "आसक्ति से मुक्त" होना। इसका मतलब है कि मनुष्य में संतुलन, समता, और आंतरिक शाति का अनुभव होना।

2. वितराग बनने के उपाय

आत्म-जागरूकता और विवेक (Self-awareness and Discrimination)

- अपने विचारों और भावनाओं को पहचानें। यह समझें कि "मैं कौन हूँ" और मेरी पहचान मेरी इच्छाओं या वस्तुओं से नहीं जुड़ी है। "न ही मैं शरीर हूँ, न ही मन; मैं शुद्ध चैतन्य हूँ" इस सच्चाई का अनुभव करें।

3. वैराग्य का अभ्यास (Practice of Detachment)

- अपने कर्मों के परिणामों से अनासक्ति रखें।
- चीजों से प्यार करें, लेकिन उनसे जुड़ें नहीं। यह गहरी समझ देती है कि सभी चीजें अस्थायी हैं।
- योग और ध्यान के माध्यम से मन को स्थिर और शांत रखें।

4. समता का विकास (Cultivation of Equanimity)

- सुख-दुख, सफलता-असफलता, लाभ-हानि में समान दृष्टि रखें।
-"जो होता है, अच्छा ही होता है" की भावना अपनाएं।

5. सत्संग और अध्ययन (Satsang and Study)

- आध्यात्मिक ग्रंथों का अध्ययन करें, जैसे कि आगम आदि।
- साधकों के साथ संगति करें और उनके अनुभवों से सीखें।

~ मुनि आगमप्रिय विजय {आनंदराज}

धर्मलाभ

सच्चा त्याग वह है,
जब मनुष्य
कुछ खोने के डर से नहीं,
बल्कि सब कुछ छोड़कर
आत्मा की शाति को अपनाता है।

आचार्य श्री रविदेव सूरिजी

मार्मिक प्रश्नमंच - 151

कोन्ग्रेच्युलेशन एसा अर्थ किस परमात्मा के नाम से होता है ?

(1) पद्मनाभ स्वामी (2) अभिनंदन स्वामी
(3) विमल नाथ जी (4) श्रेयांस नाथ जी

प्रश्नमंच 150 का जवाब : (2) 8

विजेता: श्रद्धा वालाणी - अमदावाद

जवाब 9428913847 पर whatsapp करें...

ड्रो द्वारा विजेता को नाम अर्हम् दैनिक में आयेगा एवं 13 ₹ ईनाम प्राप्त होगा।

contact : 8849680131
arhamsite9@gmail.com

आज के अंक लाभार्थी

शांताबेन प्रविणचंद्र शाह

कुर्ला - मुंबई

आशीष: प.पू.आ. श्री रविदेव सूरीश्वरजी म.सा

अर्हम् साईट प्रकाशित

अर्हम् दैनिक

Arham Site

अर्हम् साईट

ता. 4. 4. 2025

शुक्रवार

चैत्र सुदी सप्तमी

अंक : 4

आनंदराज की कलम

अरिहंत भगवान के 12 गुण का स्मरण करें।

अष्ट प्रातिहार्य

1. अशोक वृक्ष : जहां परमात्मा का समवसरण होता है, वहां उनके शरीर से 12 गुना बड़ा आसोपालव का वृक्ष देवता बनाते हैं। उस वृक्ष के नीचे बैठकर परमात्मा उपदेश देते हैं।

2. सुरपुष्प वृष्टि : एक योजन तक देवता सुगधित पांच रंगों के फूलों की वर्षा करते हैं।

3. दिव्य ध्वनि : परमात्मा के प्रवचन के दौरान देवता वीणा, बांसुरी आदि वाद्यों से मधुर ध्वनि प्रदान करते हैं।

4. चामर : रत्नजड़ित सुवर्ण की डंडे वाले चार जोड़ी सफेद चामर से देवता परमात्मा की पूजा करते हैं।

5. आसन : परमात्मा को बैठने के लिए रत्नजड़ित सुवर्णमय आसन प्रदान किए जाते हैं।

6. भामंडल : परमात्मा के मुख पर इतना तेज होता है कि सामान्य व्यक्ति उसे देख नहीं सकता। इसलिए देवता भामंडल की रचना करते हैं, जो शरद ऋतु के सूर्य के समान दिखाई देता है, जिससे उनका मुख सामान्य व्यक्ति देख सकता है।

7. दुंदुभि : समवसरण के समय देवता दुंदुभि आदि वाद्य बजाते हैं, जो यह सकेत देता है कि भव्य जीव इन भगवंत की सेवा करें।

8. छत्र : परमात्मा के मस्तक के ऊपर मोतियों के हार से सुशोभित छत्र बनाए जाते हैं। परमात्मा पूर्व दिशा में बैठते हैं, और देवता उनके तीन प्रतिबिंब बना कर बाकी तीन दिशाओं में स्थापित करते हैं, जिससे सभी दिशाओं में कुल 12 छत्र बनते हैं।

चार मूल अतिशय

1. ज्ञानातिशय : परमात्मा की वाणी 35 गुणों से युक्त होती है, जिसके कारण सभी भव्य जीवों के सदेह का निवारण होता है।

2. पूजातिशय : परमात्मा तीनों लोकों में पूजनीय हैं। देव, इंद्र, सुरेन्द्र आदि प्रभु उनकी पूजा करते हैं।

3. वचनातिशय : परमात्मा की वाणी एक योजन दूर तक सभी जीव सुन सकते हैं, साथ ही सभी अपनी भाषा में समझ सकते हैं।

4. अपायापगमातिशय : जहां परमात्मा विचरण करते हैं, वहां से 125 योजन तक उनके प्रभाव से किसी भी प्रकार का उपद्रव नहीं होता, और जो पूर्व में हुए हों, वे नष्ट हो जाते हैं।

~ मुनि आगमप्रिय विजय {आनंदराज}

धर्मलाभ

' अरिहंत ' उन दिव्य आत्माओं को कहा जाता है जिन्होंने अपने भीतर के सभी शत्रुओं पर विजय प्राप्त की है । और केवलज्ञान (सर्वज्ञता) को प्राप्त किया है।

आचार्य श्री रविदेव सूरिजी

मार्मिक प्रश्नमंच - 152

कोनसे परमात्मा को सवा करोड़ पुत्रों थें ???

(1) कुंथुनाथ स्वामी (2) शांतिनाथ स्वामी

(3) अमरनाथ स्वामी (4) आदिनाथ स्वामी

प्रश्नमंच 151 का जवाब :

(2) अभिनंदन स्वामी

विजेता: हार्दिक वालाणी - अमदावाद

जवाब 9428913847 पर whatsapp करें...

झे द्वारा विजेता को नाम अर्हम् दैनिक में आयेगा एवं 13 ₹ ईनाम प्राप्त होगा।

contact : 8849680131

arhamsite9@gmail.com

आज के अंक लाभार्थी

अर्हम् साईट फैमिली

आशीष: प.पू.आ. श्री रविदेव सूरीश्वरजी म.सा

अर्हम् साईट प्रकाशित

अर्हम् दैनिक

Arham Site

अर्हम् साईट

ता. 5. 4. 2025

शनिवार

चैत्र सुदी अष्टमी

अंक : 5

आनंदराज की कलम

आयम्बिल आराधना के क्या लाभ हैं?

-- यदि आयबिल में श्रद्धा और समझ का मिश्रण हो जाए तो सम्यक फल प्राप्त होता है।

-- आयम्बिल से आत्मबल निखरता है।

-- आयबिल अनंत कर्मों का नाश करता है।

-- आयम्बिल से मन पर विजय प्राप्त की जा सकती है।

*--*आयम्बिल विघ्न को हराने का सबसे अच्छा तरीका है।

-- उच्च गोत्र कर्म का बंध होता है।

-- आयम्बिल निकाचित कर्मों का निवारण करता है।

-- आयबिल भोजन की लालसा के लिए एक मारक है।

-- आयबिल भोजन के प्रति मोह को तोड़ता है।

*--*आयबिल से अनंत प्राणियों को अभयदान दिया जा सकता है।

-- आयबिल शाश्वत अनंत काल की बाधाओं को दूर करता है।

-- आयबिल अनासक्ति से अरिहंत की ओर ले जाने वाली आराधना है।

-- आयबिल ब्रह्मचर्य में सहायक होता है। क्योंकि विगई विकार का कारण है, जबकि आयम्बिल विकार नाशक है।

-- आयबिल में चीनी और तेल-घी रहित आहार का प्रयोग करने से लीवर को कुछ आराम मिलता है और उसे कम काम करना पड़ता है।

-- चयापचय प्रक्रिया धीमी होने से लीवर और अन्य अंगों को क्रियाशील होने का समय मिल जाता है।

-- लीवर से जुड़ी कई समस्याएं दूर हो जाती हैं।

शरीर का स्वास्थ्य:

-- आयम्बिल रक्त को शुद्ध करता है।

*--*पाचन क्रिया दुरूस्त रहती है।

*--*प्रतिरोधक शक्ति बढ़ती है।

-- शरीर को डिटॉक्सीफाई करता है।

-- आस्था से कुष्ठ जैसे चर्म रोग भी ठीक हो सकते हैं।

-- बिना तेल और चीनी के भी शरीर को पर्याप्त पोषण मिलता है।

" आराधना में अनासक्ति सिद्धपद की सार्थकता "

~ मुनि आगमप्रिय विजय {आनंदराज}

धर्मलाभ

" अनासक्ति " भाव वह स्थिति है जिसमें व्यक्ति अपने कर्तव्यों और कार्यों को बिना किसी व्यक्तिगत लाभ या परिणाम की आशा के करता है।

आचार्य श्री रविदेव सूरिजी

मार्मिक प्रश्नमंच - 153

24 भगवान में से कितने प्रभु ने लग्न नहीं किये ??

(1) 24 (2) 2 (3) 5 (4) 10

प्रश्नमंच 152 का जवाब :

(3) अरनाथ स्वामी

विजेता: जयश्री बेन बी. शेठ - सिंहोरी

जवाब 9428913847 पर whatsapp करें...

ड्रो द्वारा विजेता को नाम अर्हम् दैनिक में आयेगा एवं 13 ₹ ईनाम प्राप्त होगा।

contact : 8849680131

arhamsite9@gmail.com

आज के अंक लाभार्थी

अर्हम् साईट फैमिली

आशीषः प.पू.आ. श्री रविदेव सूरीश्वरजी म.सा

अर्हम् साईट प्रकाशित

अर्हम् दैनिक

Arham Site

अर्हम् साईट

ता. 6. 4. 2025

अंक : 6

रविवार

चैत्र सुदी नोम

आनंदराज की कलम

रवि पूष्य नक्षत्र का प्रभाव व्यक्ति के जीवन पर कई तरह से पड़ सकता है, जो उसके जन्म कुंडली, ग्रहों की स्थिति, और उस समय की स्थिति पर निर्भर करता है। यह नक्षत्र विशेष रूप से शुभ और मंगलकारी मानी जाती है, खासकर जब सूर्य इस नक्षत्र में स्थित होता है।

1. सकारात्मक प्रभावः

आत्मविश्वास और नेतृत्वः सूर्य के पूष्य नक्षत्र में होने से व्यक्ति में नेतृत्व की गुण और आत्मविश्वास बढ़ता है।

धन और समृद्धिः यह नक्षत्र आर्थिक समृद्धि के लिए शुभ मानी जाती है, खासकर यदि व्यापार या निवेश की योजना हो।

स्वास्थ्यः मानसिक और शारीरिक रूप से मजबूत रहने की संभावना रहती है।

शुभ कार्यों के लिए उपयुक्तः विवाह, गृह प्रवेश, नई नौकरी, या व्यवसाय शुरू करने के लिए आदर्श समय होता है।

2. नकारात्मक प्रभाव (यदि ग्रहों की स्थिति अनुकूल न हो):

अहंकार की प्रवृत्तिः सूर्य की शक्ति अधिक होने से कभी-कभी व्यक्ति में अहंकार या जिद्दीपन आ सकता है।

परिवारिक विवादः परिवार में तनाव या मतभेद की स्थिति उत्पन्न हो सकती है।

अति आत्मविश्वासः कभी-कभी व्यक्ति बिना सोच-विचार के जोखिम उठाता है, जिससे नुकसान हो सकता है।

3. व्यक्तित्व पर प्रभावः

सच्चाई और धर्मनिष्ठाः इस नक्षत्र के तहत जन्मे लोग अक्सर ईमानदार और सत्यवादी होते हैं।

संरक्षक स्वभावः दूसरों की मदद करने में आनंद महसूस करते हैं।

धार्मिक और आध्यात्मिक प्रवृत्तिः धार्मिक कार्यों में रुचि और आध्यात्मिक विकास की ओर झुकाव रहता है।

4. विशेष रूप से शुभ कार्यः

धार्मिक अनुष्ठान और पूजा-पाठ करना।

नए कार्य की शुरुआत या महत्वपूर्ण निर्णय लेना।

शिक्षा, चिकित्सा, प्रशासनिक कार्यों में सफलता प्राप्त करना।

~ मुनि आगमप्रिय विजय {आनंदराज}

धर्मलाभ

चंद्रमा की वृद्धि और कमी की तरह, जीवन में भी उतार-चढ़ाव आता है..... धैर्य ही ! सच्चे ज्योतिष का ज्ञान है ।

आचार्य श्री रविदेव सूरिजी

मार्मिक प्रश्नमंच - 154

जिसके पांच कल्याणक चंपापुरी में हुए वह परमात्मा का नाम ??

(1) श्रेयांसनाथ। (2) मल्लीनाथ

(3) महावीर स्वामी (4) वासुपूज्य स्वामी

प्रश्नमंच 153 का जवाब : (2) 2

विजेताः पूजा पी. शाह - कृष्णनगर

जवाब 9428913847 पर whatsapp करें...

ड्रो द्वारा विजेता को नाम अर्हम् दैनिक में आयेगा एवं 13 ₹ ईनाम प्राप्त होगा।

contact : 8849680131

arhamsite9@gmail.com

आज के अंक लाभार्थी

आयना जैन के जन्मदिन निमित्त - मुंबई

आशीष: प.पू.आ. श्री रविदेव सूरीश्वरजी म.सा

अर्हम् साईट प्रकाशित

अर्हम् दैनिक

Arham Site

अर्हम् साईट

ता. 7.4.2025

सोमवार

चैत्र सुदी दशम

अंक : 7

आनंदराज की कलम

" गुरुतत्व कि साधना नवपदजी अंतर्गत"

गुरु केवल एक शिक्षक नहीं होते, बल्कि वे एक मार्गदर्शक, प्रेरक और जीवन के हर चरण में सहायक होते हैं। वे शिष्य को न केवल ज्ञान देते हैं, बल्कि जीवन जीने की कला भी सिखाते हैं।

1. ज्ञान और बुद्धिमत्ता :

गुरु के पास गहरा ज्ञान और अनुभव होता है। वे न केवल पुस्तकीय ज्ञान देते हैं, बल्कि जीवन के अनुभवों से भी सीखने के लिए प्रेरित करते हैं।

2. मार्गदर्शन और सलाह :

गुरु शिष्य को सही रास्ते पर चलने की सलाह देते हैं और जीवन के कठिन निर्णयों में मार्गदर्शन करते हैं।

3. निस्वार्थ प्रेम और देखभाल :

गुरु अपने शिष्य के प्रति निस्वार्थ प्रेम और देखभाल दिखाते हैं। वे शिष्य की सफलता में ही अपनी खुशी महसूस करते हैं।

4. चरित्र निर्माण :

गुरु न केवल ज्ञान प्रदान करते हैं, बल्कि शिष्य के चरित्र और नैतिक मूल्यों का निर्माण भी करते हैं।

5. धैर्य और सहनशीलता :

गुरु में धैर्य और सहनशीलता की विशेषता होती है। वे शिष्य की गलतियों को समझते हैं और उन्हें सुधारने का प्रयास करते हैं।

6. प्रेरणा और उत्साहवर्धन :

गुरु शिष्य को आत्मविश्वास और प्रेरणा देते हैं ताकि वह अपने सपनों को साकार कर सके।

7. जीवन के सिद्धांत सिखाना :

गुरु शिष्य को जीवन के महत्वपूर्ण सिद्धांत जैसे ईमानदारी, परिश्रम, सत्यता और करुणा सिखाते हैं।

गुरु का महत्व शब्दों में नहीं, बल्कि उनके जीवन जीने के तरीके और शिष्य पर उनके प्रभाव में झलकता है। वे ही सच्चे अर्थों में हमें जीवन के सच्चे मूल्य सिखाते हैं। वैसे ज्ञानदाता उपाध्याय भगवंत को शत शत वंदना....

~ मुनि आगमप्रिय विजय {आनंदराज}

धर्मलाभ

ज्ञान का प्रकाश अंधकार को मिटाता है.... और जो इसे बांटता है , वह सच्चा प्रकाशस्तंभ बन जाता है ।

आचार्य श्री रविदेव सूरिजी

मार्मिक प्रश्नमंच - 155

हजार आंबा के वृक्ष वाले वन में कोनसे प्रभु दिक्षित हूए ???

(1) महावीर स्वामी (2) आदिनाथ

(3) नेमिनाथ (4) वासुपूज्य स्वामी

प्रश्नमंच 154 का जवाब :

(4) वासुपूज्य स्वामी

विजेता: श्री कार्तिक - हैद्राबाद

जवाब 9428913847 पर whatsapp करें...

झ्रो द्वारा विजेता को नाम अर्हम् दैनिक में आयेगा एवं 13 ₹ ईनाम प्राप्त होगा।

contact : 8849680131

arhamsite9@gmail.com

आज के अंक लाभार्थी

www.arhamsite.com

क्लिक करें

आशीष: प.पू.आ. श्री रविदेव सूरीश्वरजी म.सा

अर्हम् साईट प्रकाशित

अर्हम् दैनिक

Arham Site

अर्हम् साईट

ता. 8. 4. 2025

मंगलवार

चैत्र सुदी ग्यारस

अंक : 8

आनंदराज की कलम

धर्म के सरल 7 नियमों में सत्यनिष्ठा, अहिंसा, दया, क्षमा, ईमानदारी, सेवा और प्रेम शामिल हैं, जो सभी के लिए एक बेहतर और शांतिपूर्ण जीवन जीने में मदद करते हैं.

यहाँ धर्म के 7 सरल नियमों का विस्तृत विवरण दिया गया है:

1. सत्यनिष्ठा (Truthfulness):
हमेशा सत्य बोलें और अपने कर्मों में भी सत्य का पालन करें.

2. अहिंसा (Non-violence):
किसी भी जीव को नुकसान न पहुँचाएं, चाहे वह शारीरिक हो या मानसिक.

3. दया (Compassion):
सभी जीवों के प्रति दयालु रहें और उनकी मदद करें.

4. क्षमा (Forgiveness):
दूसरों की गलतियों को क्षमा करें और उनसे नफरत न करें.

5. ईमानदारी (Honesty):
हमेशा ईमानदार रहें और किसी भी प्रकार का धोखा न करें.

6. सेवा (Service):
दूसरों की सेवा करें और समाज के लिए कुछ अच्छा करें.

7. प्रेम (Love):
सभी के प्रति प्रेम और सम्मान रखें.

~ मुनि आगमप्रिय विजय {आनंदराज}

नमस्कार महामंत्र के पंचम पद में
स्थान प्राप्त करनार " सव्व साहुणं "
द्रव्य से या भाव से सभी को
अंत:करण पूर्वक नमस्कार वंदना.....

धर्मलाभ

साधु वह नहीं जो सिर्फ़ साधना करता है ।
बल्कि वह है जो हर क्षण में सच्चाई, करुणा और प्रेम का प्रकाश फैलाता है।

आचार्य श्री रविदेव सूरिजी

मार्मिक प्रश्नमंच - 156

दो माता की रत्नकुक्षी में रहनेवाले परमात्मा का नाम ???

(1) महावीर स्वामी (2) आदिनाथ जी
(3) शांतिनाथ जी (4) मुनिसुव्रत स्वामी

प्रश्नमंच 155 का जवाब :
(3) नेमिनाथ
विजेता: नमो जैनम्

जवाब 9428913847 पर whatsapp करें...
ड्रो द्वारा विजेता को नाम अर्हम् दैनिक में आयेगा एवं 13 ₹ ईनाम प्राप्त होगा।

contact : 8849680131
arhamsite9@gmail.com

आज के अंक लाभार्थी

" नमो लोए सव्व साहुणं "
" नमो लोए सव्व साहुणं "
" नमो लोए सव्व साहुणं "

आशीष: प.पू.आ. श्री रविदेव सूरीश्वरजी म.सा

अर्हम् साईट प्रकाशित

अर्हम् दैनिक

Arham Site

अर्हम् साईट

ता. 9. 4. 2025

बुधवार

चैत्र सुदी बारस

अंक : 9

आनंदराज की कलम

यह अपना लो महानता आपके कदमों में.....

1. **स्वयं के लिए जिम्मेदारी लेना:**
यह निर्णय जीवन में अपने कृत्यों के लिए पूरी जिम्मेदारी लेने का है, बिना किसी बाहरी कारणों या परिस्थितियों को दोष देने के।

2. **सकारात्मक सोच को अपनाना:**
सकारात्मक दृष्टिकोण अपनाना एक महत्वपूर्ण निर्णय है, जो जीवन की कठिनाइयों और चुनौतियों को अच्छे तरीके से सामना करने में मदद करता है।

3. **निरंतर सीखने की इच्छा रखना:**
जीवन में निरंतर विकास और सुधार के लिए शिक्षा और ज्ञान प्राप्त करने का निर्णय लेना आवश्यक है। यह निर्णय हमें आगे बढ़ने के लिए प्रेरित करता है।

4. **स्वास्थ्य को प्राथमिकता देना:**
शारीरिक और मानसिक स्वास्थ्य को प्राथमिकता देना एक बड़ा निर्णय है, क्योंकि एक स्वस्थ शरीर और मन ही महान कार्यों को अंजाम देने के लिए सक्षम होते हैं।

5. **साहसिक निर्णय लेना:**
अपनी ज़िंदगी में कभी-कभी साहसिक कदम उठाना होता है, जो भय को पार करके नए रास्तों पर चलने का निर्णय हो।

6. **दूसरों की मदद करना:**
समाज के प्रति जिम्मेदारी और दूसरों की सहायता करने का निर्णय महानता की ओर ले जाता है। यह निर्णय मानवता और करुणा को बढ़ावा देता है।

7. **अवसरों को पहचानना और उनका उपयोग करना:**
सही अवसर को पहचानना और उसका सही तरीके से उपयोग करना, यह निर्णय सफलता और महानता की ओर मार्गदर्शन करता है।

8. **सफलता के बजाय उद्देश्य पर ध्यान केंद्रित करना:**
केवल परिणाम के बजाय अपने उद्देश्य और मिशन पर ध्यान देना महानता को प्राप्त करने का एक महत्वपूर्ण निर्णय है।

9. **सतत संघर्ष और परिश्रम का चुनाव करना:**
कठिनाइयों से घबराने के बजाय, निरंतर संघर्ष और परिश्रम करना एक महत्वपूर्ण निर्णय है जो अंततः सफलता और महानता की ओर ले जाता है।

10. **अपने मूल्यों और सिद्धांतों के प्रति निष्ठा रखना:**
महानता का एक बड़ा निर्णय यह है कि हम अपने सिद्धांतों, मूल्यों और विश्वासों के प्रति हमेशा निष्ठा बनाए रखें, चाहे परिस्थितियाँ कैसी भी हों।

~ मुनि आगमप्रिय विजय {आनंदराज}

धर्मलाभ

सच्ची महानता
उन लोगों में होती है
जो अपने
छोटे से कार्य को भी
पूर्ण समर्पण के साथ
करते हैं।

आचार्य श्री रविदेव सूरिजी

मार्मिक प्रश्नमंच - 157

समग्र अवनि मां
प्रथम पालक राजा कौन थे ??

(1) श्रेणीक महाराजा (2) कुमारपाल
(3) अकबर बादशाह (4) आदिनाथ प्रभु

प्रश्नमंच 156 का जवाब :
(1) महावीर स्वामी
विजेता: योगेश्वरी बेन - कादिवली

जवाब 9428913847 पर
whatsapp करें...
ड्रो द्वारा विजेता को नाम
अर्हम् दैनिक में आयेगा
एवं 13 ₹ ईनाम प्राप्त होगा।

contact : 8849680131
arhamsite9@gmail.com

आज के अंक लाभार्थी

www.arhqmsite.com
क्लिक करें

आशीष: प.पू.आ. श्री रविदेव सूरीश्वरजी म.सा

अर्हम् साईट प्रकाशित

अर्हम् दैनिक

Arham Site
अर्हम् साईट
ता. 10. 4. 2025
गुरु वार
चैत्र सुदी तेरस
अंक : 10

आनंदराज की कलम

भगवान महावीर जन्मकल्याणक पर जानिए प्रभु के सिद्धांत

भगवान महावीर का दृष्टिकोण हमें सिखाता है कि जीवन में कैसी भी कठिनाई या पीड़ा क्यों न आए, अगर हम अपने मन और आत्मा को संयम में रखें, तो हम हर कष्ट को सह सकते हैं – बिना किसी हिंसा या प्रतिक्रिया के।

प्रभु महावीर के प्रेरणादायक सिद्धांत

1. " अहिंसा सबसे बड़ा धर्म है " – किसी भी प्राणी को मन, वचन और कर्म से कष्ट न पहुँचाना ही सच्चा धर्म है।
2. " क्रोध, घृणा और मोह आत्मा के शत्रु हैं " – इनसे दूर रहकर ही आत्मा की शुद्धि संभव है।
3. " स्वयं पर विजय सबसे बड़ी विजय है " – खुद को समझना, नियत्रित करना और सुधारना ही असली वीरता है।
4. " संतोष ही सच्चा सुख है " – इच्छाओं पर नियंत्रण और जो है उसमें संतुष्टि ही जीवन की शाति है।
5. " सत्य बोलो, पर संयम से " – सच बोलना जरूरी है, लेकिन ऐसा सच जो किसी को चोट न पहुँचाए।
6. " अनेकांतवाद को अपनाओ " – हर व्यक्ति की सोच अलग होती है, हर बात को कई दृष्टिकोण से देखना सीखो।
7. " अपरिग्रह से जीवन सरल बनता है " – जितना कम संग्रह, उतना कम तनाव; त्याग में ही सच्चा सुख है।
8. "आत्मा ही परम सत्य है " – शरीर नश्वर है, लेकिन आत्मा अमर है; आत्मा की शुद्धि ही जीवन का लक्ष्य होना चाहिए।

इन सभी सिद्धांतों में गहरी आध्यात्मिकता और व्यावहारिक जीवन के लिए दिशा छिपी है। बताओ, इनमें से कौन-सी बात तुम्हें सबसे ज्यादा प्रेरित करती है?

~ मुनि आगमप्रिय विजय {आनंदराज}

धर्मलाभ

भगवान महावीर की वाणी का आत्मसात करना मतलब आगमिक ग्रंथों के आधार से जीवन यात्रा को चलाना....

आचार्य श्री रविदेव सूरिजी

मार्मिक प्रश्नमंच - 158

भिक्षा आपी दिक्षा लेनार कौन ??

(1) मृगावती (2) सुलसा
(3) द्रौपदी (4) चंदनबाला

प्रश्नमंच 157 का जवाब :
(4) आदिनाथ प्रभु
विजेता: श्री राजेश शाह - पार्ला

जवाब 9428913847 पर whatsapp करें...
ड्रो द्वारा विजेता को नाम अर्हम् दैनिक में आयेगा एवं 13 ₹ ईनाम प्राप्त होगा।

contact : 8849680131
arhamsite9@gmail.com

आज के अंक लाभार्थी

भगवान महावीर का जन्म कल्याणक
समग्र सृष्टि का कल्याण करें !

www.arhamsite.com